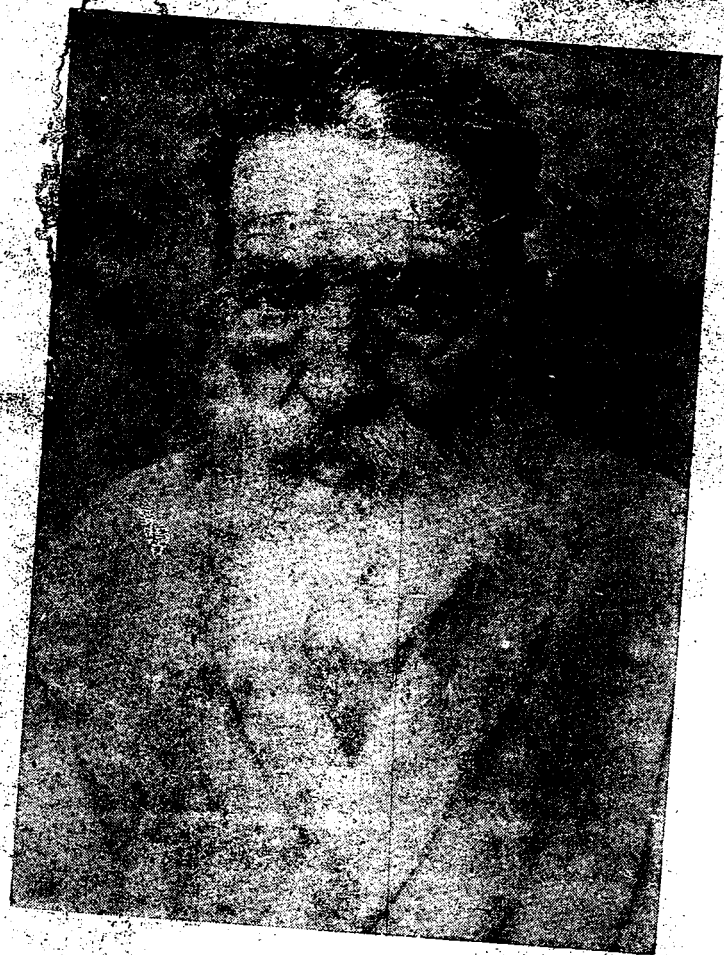

परमसन्त, परमदयाल
फकीर चन्द जी महाराज

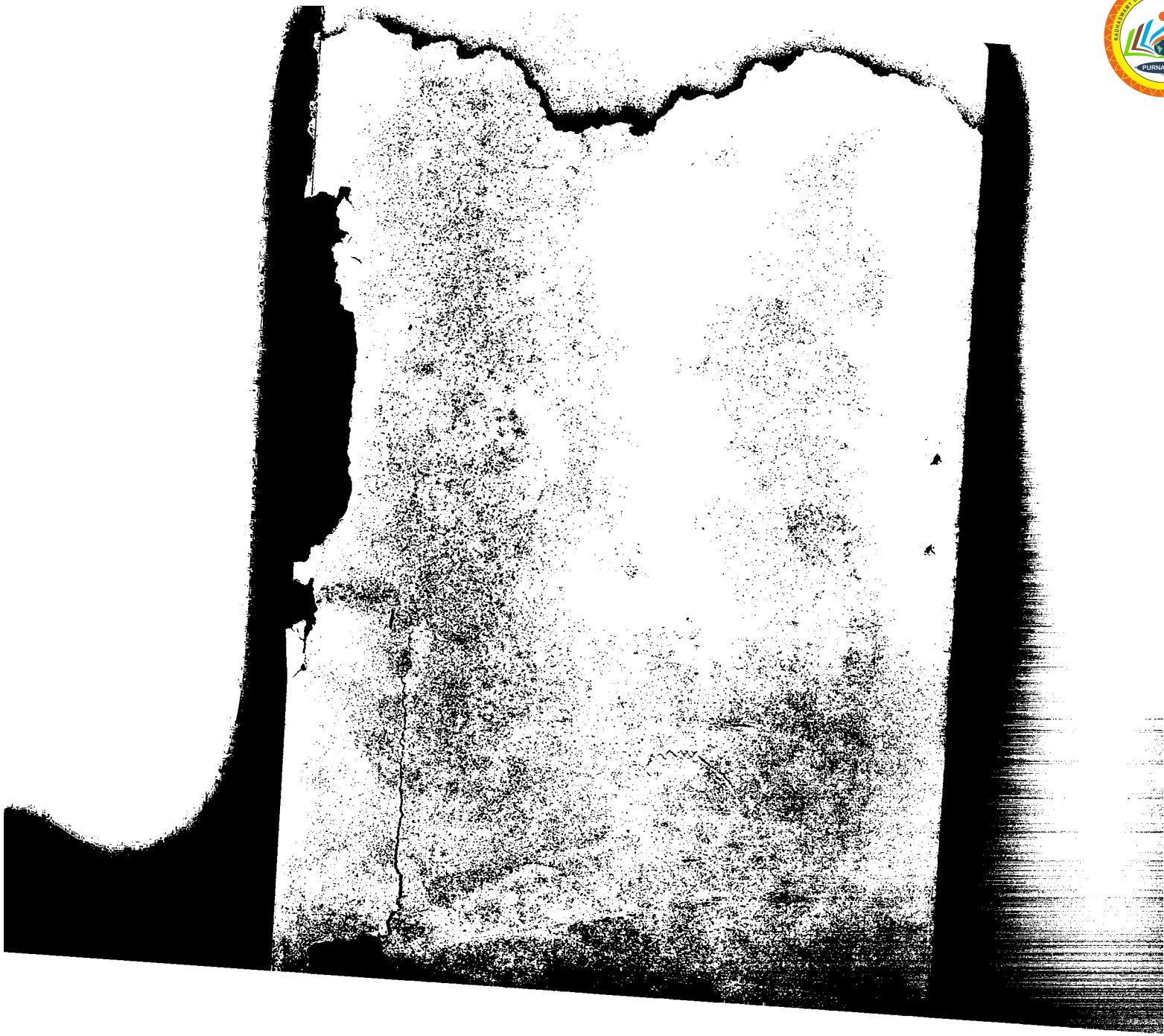

पाक्षिक—

मानव मन्दिर

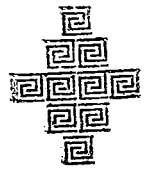

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटायर्ड)

वर्ष 7	सोमवार 10 नवम्बर 1980	संख्या 7

निरंजन का जाल ।
सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक २७-७-१९८०

"गुरु पूर्णिमा का सत्संग"

मानवीय प्रकृति स्वाभाविक ही उपकार मानती है। इसलिए हर एक धर्म ब संप्रदाय अपने अपने यूर्वजों के दिन मनाता है। हमारे यहां करवाचौथ आती है, वो सास की पूजा के लिए दिन निश्चित किया गया हैं। मगर आजकल तो केवल एक रीति बन कर रह गई। औरतें व्रत रखती हैं चांद चढ़ता हैं तो खाती है मगर सासों के साथ लड़ती हैं और सासें वहुओं के साथ लड़ती हैं। जिस

उद्देश्य के लिऐ यह दिन बनाया गया था वह पूरा नहीं हुआ। केवल भेड़चाल बन गई। मुसलमानों में मुहम्मद साहिब के पैदा होने व शहीद होने पर दिन मनाया जाता है, सिक्खों में गुरुओं के दिन मनाते हैं, हिन्दुओं में राम और कृष्ण के दिन मनाते हैं। ऐसे ही गुरु पूजा का दिन गुरु के उपकार की याद मनाने का दिन है। मैं रीति रिवाज नहीं मनाना चाहता। अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तुम पर सत्गुरु ने क्या उपकार किया ? मैं तो परमात्मा; ईश्वर, राम, कृष्ण तथा भगवान को मानने वाला था और मेरा भाग्य संतमत में ले आया। यहां सब का खण्डन था। वह कहते हैं जो कुछ है वह गुरु है। दाता दयाल ने भी लिख दिया—

मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक,
ईश ब्रह्म नहीं जानूं।
मैं फकीर का नाम दिवाना,
सब से बढ़कर मानूं।
जो फकीर मोहे दर्शन देवे,
अपना भाग्य सराहूं।
अपने तन के चाम की जूती,
पग फकीर पहनाऊं।

तू फकीर बन, तू फकीर बन,
तू फकीर बन भाई।
मैं भी तरूं फकीर चरण लग,
है फकीर सुखदाई।

यह बात मेरी समझ में नहीं आती थी। आज आप को कबीर साहिब का शब्द सुनाता हूं। इस संतमत की वाणीयों और इसी प्रकार के शब्दों ने मुझे चकित किया था।

अवधू निरंजन जाल पसारा ॥ टेक ॥
स्वर्ग पताल जीव मृत-मंडल, तीन लोक विस्तारा।
ब्रह्मा विस्नु सिव प्रगट कियो है ताहि दियो सिर भारा॥
ठांव ठांव तीरथ ब्रत थाप्यो, ठगने को संसारा।
माया मोह कठिन बिस्तारा, आपु भयो करतारा॥
सतगुरु शब्द को चीन्हत नाहीं, कैसे होय उवारा।
जारि भूंजि कोइला करि डारै, फिरि फिरि लै अवतारा॥
अमर लोक जहं पुरुष विराजै, तिन का मूंदा द्वारा।
जिन साहेब से भये निरंजन, सो तो पुरुष है न्यारा॥
कठिन काल तें बाचा चाहो, गहो शब्द टकसारा।
कहैं कबीर अमर करि राखौं, मानो शब्द हमारा॥

तुम देखो ! मैं ब्राह्मण हूं सब लोग व सब धर्म उस परमात्मा को जिसने दुनियां बनाई है,

मानते हैं और मेरी किस्मत मुझे कहां ले गई जहां यह लिखा हुआ है कि जिसने दुनियां बनाई है उसने जाल फैलाया हुआ है और भक्त, उपासक, ध्यानी, योगी, ज्ञानी इन सब ने चक्कर खाया है। मैं रोया करता था कि ऐ मालिक! मैं कहां फंस गया ? यदि मैं किताबे पढ़ कर जाता तो मैं कभी राधास्वामी मत में न आता, इन का खण्डन मुझ से सहन न होता मगर फंस गया। सच्चाई और हकीकत का इच्छुक था कि वास्तव में इन सन्तों के पास ऐसी बात लिखने का क्या हक था कि वेदान्ती भी भूल गये सूफी, बुद्ध, जैन कोई भी नहीं पहुंचा और वह क्या चीज़ है जो संत बताना चाहते हैं। आज्ञा थी गुरु की सेवा करो। मुझ से जितनी हो सको मैंने की, सच्चे दिल से की, लालच के लिए नहीं की। बल्कि बिना दुनिया की इच्छाओं के की । कभी दुनियां नहीं मांगी। जब यह भेद नहीं मिलता था और समझ नहीं आती थी तो मैंने दाता दयाल को 6 घंटे तंग किया कि मुझे वह बात बताओ जो यह संतमत कहता है कि हमारा घर कहां है।

कहने लगे सुवह बताऊंगा। सुवह गया, पांच पैसे और एक नारियल मेरो गोद में डाल दिया और मेरे माथे पर तिलक लगा कर दाता दयाल ने मेरे पांव पर माथा टेक दिया और कहा नाम दान दिया कर, सत्संग कराया कर। जिस चीज़ के लिए कुदरत ने तुमको मेरे साथ लगाया है वो सच्चा सतगुरु तुमको सत्संगियों के रुप में मिलेगा और जिस वहम में तू पड़ा हुआ हैं उस वहम से निकालेगा। वह तुमको यह बात समझायेगा। शायद तू भी तर जाये औरों को भी तार जाये। आज उनकी दया से और आप लोगों की सेवा करने से मैं इस वहम से निकल गया और मेरे दिमाग़ के अन्दर जिस चीज़ की खोज थी वह सच्चाई मुझ को मिल गई। इसलिए मैं धन्यवाद करने के लिए दिन मनाता हूं और जो कुछ मैंने ज़िन्दगी में अनुभव किया है, वो आप लोगों को व दुनियां को देना चाहता हूं। यह कार्य जो मुझे दिया था केवल इस राज़ को समझाने के लिए दिया था कि निरंजन ने जाल कैसे पसारा हुआ

है और असलीयत की समझ हासिल करके तुम कैसे बच सकते हो। निरंजन कहते हैं-सोहुंम पुरुष को जहाँ से यह रचना होती है। हमारे अन्दर हमारा जो अहंपन है यह निरंजन देश है। निरंजन की हो शकल है। जिस तरह हम अपने मन से तरह तरह के ख्याल उठा उठा कर खुश होते हैं, दुखी होते हैं, रोते हैं, पीटते हैं, बहुत कुछ कहते हैं, इसी तरह वह जो ऊपर का निरंजन है उसने यह दुनियां रचाई और हम पैदा हो गये। उसने जीव पैदा किये और उनके साथ यहां क्या कुछ बीतता है तुम सोच लो।

पौदे व वृक्ष होते हैं इन में जान है। इनमें कीड़े लग जाते हैं, कीड़े पत्तों को खाते हैं। तुम्हारे शरीर को कीड़ें खायें तो तुमको दर्द नहीं होगा ? तुम यह समझते होगे कि वृक्षों को दुख नहीं होता यह ग़लत है। आज कल तो वैज्ञानिक वृक्षों को टीके लगाते हैं ताकि उनकी बीमारी चली जाए। कीड़ों को पक्षी खाते हैं, गाय, भैंस, बकरी को शेर और भेड़िये खाते है और इन्सान को इन्सान खाता है यह दुनियां में क्या हो रहा है। जब लड़ाई

होती है तो लाखों आदमी मारे जाते हैं। इस निरंजन ने जीव पैदा किये और इनको दुःख हुआ। कबीर साहिब अपने तजुर्बे के आधार पर यह कहते हैं कि सिवाय गुरु के तुमको कोई इस आवागमन के झमेले से नहीं निकाल सकता। गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का और बिवेक का। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का, सच्चे राज़ का और सच्चे भेद का। यह भेद मुझको मन के रूप को समझ जाने से समझ में आया। यह जितने मन के ख्याल व संकल्प की दुनियां है यह सब निरंजन की दुनियां है संत इस निरंजन को काल कहते हैं। जब तक मेरी ज़िन्दगी है मन तो मेरे साथ है। मगर सतगुरु की दया से मैं इस मन के चक्कर में फंसता नहीं हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि यह ख्याल है, कल्पना है और माया है। जब तक यह ज्ञान किसी को नहीं होता उसका आवागमन से छुटकार नहीं हो सकता।

निरंजन अपने संकल्प से दुनियां को पैदा करता हैं वो हमारे अन्दर भी मौजूद है। यह दुनियां संस्कार, संकल्प, ख्याल और माया की है। ख्याल का असर दूसरों पर पड़ता है। जैसा ख्याल वैसा हाल। जैसी

मति वैसी गति। मगर जब तक तुम इस निरंजन देश में हो तुमको क्या करना चाहिए ? ख्याल संस्कार, गर्भाधान संस्कार, बचपन के संस्कार, मुण्डन संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार, गृह संस्कार, फिर मर जाओ तो फिर संस्कार! संस्कार का अर्थ है कि ख्याल दिया जाता है। आम दुनियां के लिए वेद मार्ग है। असूल जो है ख्याल का है, माया का है। "शिव संकल्पं अस्तु" अपने ख्याल को ठीक करो अपनी नीयत को साफ करो।

सबसे ज्यादा ज़रूरी बात यह है कि संतान को संतान के ख्याल से पैदा करो। बिल्कुल साफ बात कहता हूं अगर ऐसा नहीं करोगे तो रोते रहोगे सिर पीटते रहोगे तुम्हारे दुख दूर नहीं हो सकते। न लड़के बाले अच्छे हो सकते हैं। आजकल अपनी सन्तान से सब दुखी हैं। कोई किस्मत वाला ही आदमी है जिसको औलाद से शिकायत नहीं है। ऐसा क्यों है ? माँ-बाप का संस्कार होता है। माता के पेट में बच्चा होता है जो कुछ वह सोचती रहती है, जैसी आशा रखती है उसका असर बच्चे पर पड़ता हैं। बच्चा पेट में है स्त्री-पुरुष भोग करते रहते हैं।

मां कामातुर होती है, वह बच्चा समय से पहले कामी और Out of Control होगा। लड़कियों का हाल देखो। लड़कियां खराब हो जाती हैं, स्कूलों में विगड़ जाती हैं, मेरे पास जवान लड़कियों के पत्र आते हैं, मैं फला लड़के से प्यार करती हू मां-बाप फलां जगह शादी करना चाहते हैं आप आर्शीवाद दें कि जहां मैं चाहती हूं वहां शादी हो जाये। अपनी इच्छा के अनुकूल शादी करना चाहती हैं। इसलिए अगर दुनियां में सुख चाहते हो तो अच्छी सन्तान पैदा करो That is the main point which I want to touch.

दूसरे इन्सान का मन हमेशा खुराक से बनता है। जिस प्रकार का अन्न या खुराक खाओगे वैसा असर होगा। खुराक में ख्याल की ताकत है। हर व्यक्ति की अपनी रोज़ी हक और हलाल की होनी चाहिए। अपने गाढ़े पसीने की कमाई की रोटी होनी चाहिए। इसलिए संतों के मार्ग में है कि अपनी रोटी आप कमा कर खाओ। खुराक सतो-गुणी हो। मैं जब दाता के दरबार में गया था तो उन्होंने मुझे चार हदायतें की थी। रोटी अपनी

आप कमा कर खाओ ? 2. अपने धर्म की बात दूसरों को मत बताओ जब तक कोई न पूछे और उतनी बताओ जितनी तुम्हारे तजुर्बे में आई है। किताबों की बात नहीं करनो। 3. किसी के Private हालात मत मालूम करो। अगर मालूम हो गये हैं तो किसी पर प्रगट मत करो। 4. चौथी बात यह थी कि अपने रिशतेदारों, मां-बाप, नौकरों सबको साबित कर दो कि तुम्हारा समय उनका है, तुम्हारा पैसा उनका है मगर तुम उनके नहीं हो। इसकी समझ मुझे नहीं आती थी, अब आई है। मुझे जब नाम मिला था तो साथ यह चार बातें मुझे कहीं थी। मैं रोचक और भयानक बातें नहीं कहता। रोचकपने की उभार कर बातें कहने से अज्ञान का विश्वास तो बैठ जाता है मगर समय आता है जब वह टूट जाता है।

घोड़े की दो रकाबें होती हैं अगर दोनों रकाबा पर बराबर का भार रहे तो सवारी का आनन्द आता है अगर एक पर हो सारा भार आये तो सवारी का सुख नहीं मिल सकता। इसी तरह जिन्दगी रूपी घोड़े की भी दो रकाबें हैं, एक स्वार्थ

और एक परमार्थ। ज़िन्दगी में दुनियां भी संवारो और दीन भी हो। दुनियां में रहने के लिए मनु, भृगु, वसिष्ठ और व्यास जी के कानून पर अमल करो ताकि तुम्हारा लोक सुधर जाये। अगर परमार्थ चाहते हो तो अपना इष्ट प्रकाश और शब्द या अनामी रखना पड़ेगा। मगर इसको समझने के लिए बाहर के किसी पूर्ण गुरु के सत्संग को ज़रूरत है। जब तक किसी को पूर्ण गुरु नहीं मिलता उसको यह समझ नहीं आती।

देश के लाभ के लिए मैं यह कहना चाहता हूं कि खून का और ख्यालात का असर जाता है। जिस के बाप ने कभी लाठी नहीं उठाई, अब यह मौजूद सरकार उन आदमियों को Military में लड़ने के लिए ले जा रही है। क्या उमीद कर सकते हो कि वो दुनियां में लड़ाई लड़ेंगे। पिछली लड़ाई हुई थी जितने ऐसे आदमी थे सब भाग आये थे। इसलिए हिन्दुओं ने खास खास कार्य के लिए खास खास कौम को खास खास ख्यालात दिये थे। क्षत्रिय खून का होगा, मरता मर जायेगा छाती अड़ा कर पैर पीछे नहीं हटायेगा। यह ज़ात वर्ण जो बनाये थे वो

खास खास ख्याल के लिए बनाये थे। बात मैं सच्ची कहता हूं किसी को बुरा लगे तो लगा करे। मगर यह नहीं है। दूसरे जिनको हम शूद्र कहते हैं क्या वे अपनी इज्जत और हैसीयत नहीं रखते ? बास्तव में यह सबसे उत्तम हैं। यह वो हैं जो सब की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। ब्राह्मण न हों तो दुनियां चल सकती है लेकिन अगर देश में सफाई न हो तो तुम जी नहीं सकते। यह सूर्य भी शूद्र है। अपनी रोशनी से गन्दगी को खाता है। धूप की गर्मी से गन्दगी को सुखाता है। यह लोग मानने योग्य हैं। मगर हम लोगों ने गलती खाई। इनकी इज्जत नहीं की। मां होती है क्या वह भंगी का काम नहीं करती। बच्चे की टट्टी नहीं साफ करती। कपड़े धोकर धोविन नहीं बनती। सब कुछ होता है। इसलिए हर फिरके वाला आदमी अपना-अपना काम करे मगर आपस में द्वेष नहीं होना चाहिए। दूसरे मैं कहता हूं कि Present system of election is a Sweet poison to the Human Race क्योंकि इस से हर जगह नफरत के ख्यालात फैलते हैं। और अमन पसन्द लोगों के शुद्ध ख्यालों व विचारों को इससे सख्त धक्का पहुंचता है। मैं चाहता हूं कि मेरी यह

आवाज Government तक जाये कि तुम्हारा यह पार्टियों का जो आपस में झगड़ा है इससे You are Creating a nusiance इसकी वजह से देश में कभी भी शान्ति नहीं हो सकती। इस तरह घरों में जिस घर में पति पत्नी को नहीं बनती, बाप बेटे की नहीं बनती, भाई-भाई की नहीं बनती तुम वहां कभी आशा न रखो कि सुख और शान्ति रहेगी।

"जिस घर कला कलन्तर बसे, उस घर घड़्यों पानी नस्से" इसलिए घर में शान्ति रखो, प्रेम से रहो, ईश्वर घट घट में रहता है, ईश्वर, दुनियां को पैदा करता है, ईश्वर का स्थूल रूप तुम्हारे अन्दर तुम्हारा वीर्य है जो बच्चे पैदा करता है। तो ईश्वर की दुनियां में रहने का क्या तरीका है ? अपने वीर्य की रक्षा करो। अपने लड़के लड़कियों को समझाओ कि अपने Character को बनायें, अपने ब्रह्मचर्य को ठीक रखें। जिसका छोटी उमर में ब्रह्मचर्य ठीक नहीं है उसको Doctor लूटेंगे या मेरे जैसे महात्मा लूटेंगे। ईश्वर का सूक्ष्म रूप हमारे अन्दर हमारा मन है, जो संकल्प से अपनी दुनियां रचता है। ईश्वर किस संकल्प से बनाता है ? अगर हाथी बनाया तो

उसकी सूंड बना दी, अगर सांप की टांगें नहीं बनाईं तो उसकी पसलियों में शक्ति दे दी, अगर ऊंट बनाया तो उसकी गर्दन लम्बी कर दी। इसलिए शुभ संकल्प रखो अपने घर के व्यवहार में हमेशा बुद्धि से काम लो। घरों में जो भी कार्य करते हो सोच समझ के साथ करो। अपनी समझ में न आये तो किसी व्यक्ति से पूछो इसीलिए हमारे खानदान में पुरोहित होते थे। राम जी के भी पुरोहित वसिष्ठ जी थे। मगर यह रस्मी खानदानी प्रणाली नहीं बननी चाहिए बल्कि समझदार और लायक व्यक्ति ही पुरोहित होना चाहिए। ईश्वर का कारण रूप रोशनी है। तुम्हारे अन्दर ईश्वर का कारण रूप तुम्हारी ज्योति है। अपने अन्दर प्रकाश को प्रगट करो और यही गायत्री मन्त्र है :—

ओम् भूर् भुवः स्वः तत् सवितु र्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि धीयो यो न प्रचोदयात्।

जो कर्म तुमने पिछले किये हुये हैं उनके फल से तुम बच नहीं सकते। किसी से चार सौ बीस, धोखा, चालाकी मत करो। किसी से रुपया लिया हुआ है

वो तुम देते नहीं वह तुमको दूसरे जन्म में देना पड़ेगा। मैं हमेशा वह बात कहता हूं जिसका मेरे पास पूरा सबूत है। सुनो! म्यानी स्टेशन पर डाक्टर आज्ञा राम मेरा family doctor था वो कट्टर आर्यासमाजी था, मगर वो ज्योतिष को मानता था। उसको मैंने पूछा कि तुम आर्यासमाजी होकर ज्योतिष को क्यों मानते हो। उसने कहा मैं मयो (Mayo) कालेज लाहौर में डाक्टरी पढ़ता था। एक दिन मैं अनारकली बाजार से जा रहा था। पीछे से एक आदमी ने मेरी पीठ पर हाथ रखा। मैंने मुड़ कर देखा काले रंग का एक आदमी माथे पर टिक्के लगाये हुये था। उसने पूछा तेरा नाम क्या है? मैंने बताया आज्ञाराम। क्या काम करते हो? डाक्टरी में पड़ता हूं। कहने लगा बात सुनो। मुझे एक तरफ ले गया। सौ रुपया निकाल कर मुझे दिया और कहा कि बारह वर्ष से मेरी पीठ पर फोड़ा है मैंने बहुत इलाज कराये राजी नहीं होता। मैं ज्योतिषी हूं मैंने ज्योतिष लगाया तो मेरे ज्योतिष ने बताया कि पिछले जन्म में मैंने एक आदमी से 100 रुपये उधार लिये थे, वह मैंने जानकर उसको वापिस नहीं किये, उसका नतीजा यह निकला

यह उसकी सज़ा है। मैं यह तकलीफ उठा रहा हूं। फिर मेरे ज्योतिष ने बताया कि उस आदमी ने इन्सानी चोले में जन्म लिया हुआ है उसके नाम के पहले 'अ, आता है, डाक्करी में पढ़ता है और अगर मैं मिलना चाहूं तो वह फलां दिन फलां समय लाहौर अनारकली में मिल जायेगा। इस लिये मैं अपने प्रान्त से यहाँ आया हूं और आपकी तालाश की ताकि आपका रुपया दे दूं। आप मिल गये। यह 100 रुपया अपना ले लें तथा मेरा इलाज करें।

डाक्टर आज्ञाराम ने कहा मैं आर्यासमाजी था मैंने तो इसे हंसी ठठा समझा और उससे 100 रुपया लेकर जेब में डाल लिया। फोड़ा देखा और कहा चल तेरा इलाज कर दूं। मैंने कारबोलिक लोशन से दो तीन दिन फोड़ा धो दिया वो राज़ी हो गया। फिर वो चलने लगा तो कहने लगा वई! पिछला कर्जा तो तुम्हारा खत्म हो गया जो तुमने मेरा इलाज किया है इसका भी कुछ देना चाहता हूं। मेरे पास रुपया तो है नहीं, मैं ज्योतिषी हूं कोई सेवा बताओ। टेवा हैं

तो अपना टेवा दे दो मैं तुम्हारा जन्म पत्रा बना देता हूं। मैंने टेवा दे दिया उसने सात दिन मेरे मकान पर बैठ कर महीने महीने का फलादेश लिख दिया और जो कुछ उसने मेरी, मेरी पत्नी की और मेरी सन्तान की बावत लिखा हुआ है वो शत प्रतिशत ठीक निकला है वही होता है। इसलिए मैं ज्योतिष को मानता हूं। तो हमें क्या करना चाहिए ? अगर किसी का कर्जा लिया हुआ है तो वापिस करो दूसरे का मत खाओ। यही हमारी मुसीबत का कारण है। संकल्पमय दुनियां है। इसलिए अपने सकल्प को शुद्ध रखो और जितने दिन दुनियां में रहो खुशी से गुज़ारा करो, प्रेम व मुहब्बत से रहो और यह विचारो कि हम मुसाफिर है। जब उसकी मरज़ी होगी ले जायेगा। गुरु हर समय तुम्हारे पास है। वो ताकत प्रत्येक प्राणी के पास हर समय मौजूद है। सतगुरु भी तुम्हारे अन्दर है। तुम पूर्ण हो सब कुछ तुम्हारे अन्दर है। केवल समझ नहीं है। समझ प्राप्त करने के लिये बाहरी गुरु की जरूरत है। गुरु इष्ट है, उसको पूर्ण मानो। मत समझो वो होशियारपुर या कहीं और रहता है। मैंने आज

पूर्णिमा के दिन आपको दुनियां के सभी पहलूओं का जिक्र कर दिया । कोई बात छोड़ी नहीं । मैं आपको रोचक और भयानक बातें नहीं कहता । क्योंकि रोचकपने की उभार की बाते कहने से अज्ञानपने का विश्वास तो बैठ जाता है मगर समय आता है जब वो टूट जाता है । अगर तुम्हारा विश्वास हो तो ध्यान करने से तुम्हारी अपनी ही इच्छा शक्ति (will power) से तुम्हारा काम पूरा हो जायेगा । नीयत अपनी साफ रखो कर्म अपने ठीक करो । आप लोगों का धन्यवाद है कि आप लोगों की सेवा करने से मेरा वो वहम भ्रम तथा शंकायें कि संतमत क्या बला है, वो सब चले गये ।

मैं अपने आपको संत सतगुरु वक्त कहता हूं । जब मैं ऐसा कहता हूं तो मेरी आत्मा मुझ को लानत नहीं देती । सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का वह मैं देता हूं । संत सतगुरु वक्त कहने से मेरा इतना ही भाव है कि मन को छोड़ कर सुरत के

प्रकाशमय होने को आत्म साक्षात्कार कहते हैं। मगर जो चीज़ प्रकाश को देख रही है वो अलग है। जो अलग चीज़ है उसमें मुझसे ठहरा नहीं जाता इसलिए अब केवल शरणागत रहता हूं।

सत्संग हुजूर परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 10-8-1980

भजन बिन जीवन हैं निष्फल
मृग तृष्णा मरूस्थल भूमि, सार हीन निरजल ।
काल कर्म माया बरियाई, फांसे जीव निरबल ।
संभल संभल कर पग को धरना, कहीं न जाना फिसल ।
भजन प्रताप बचे कोई प्रानी, शब्द के मार्ग चल ।
राधास्वामी दीन सहाई, अपना दे निज बल ।

दाता दयाल का एक शब्द मुझे हर समय याद आता रहता है ।

छिन-छिन उमर घटत दिन राती, कभी सांझ कभी परभाति ।
माया मोह महा उतपाति-इनसे लगा मत लगन फकीरवा ।

उमर गुज़र गई ज़िन्दगी बदलती हुई चली आ रही है। आज यह शब्द सुना कि भजन के बिना ज़िन्दगी निष्फल है। मैंने भजन करते हुए आयु गुज़ार दी। भजन कहते हैं लीव होने को। लीन होने यानि धुन अनहद के सुनने को। जब इन्सान मन को छोड़ कर अर्थात मन के विचारों को भूल कर बाकी जो उसकी अपनी अवस्था रह जाती है उस अवस्था में ठहरता है तो उस ठहरने का नाम भजन है।

"मृग तृष्णा मरूस्थल भूमि, सार हीन निरजल।"

जिस तरह से चमकती तो रेत ही है मगर हिरन उसे पानी समझ कर उसके पीछे दौड़ता है और दौड़ २ कर मर जाता है। ऐसे ही हम लोग इस मन के चक्कर में आ कर तरह-२ के विचार दोड़ाते हैं। कभी कहीं, कभी कहीं, मगर जब इन्सान को मन के रूप का पता लग जाता है तो फिर वह मन माया के पीछे नहीं दौड़ता बल्कि भजन द्वारा अपने आप में ठहर जाता है।

आज यहां मानवता प्रचारक संघ के श्री रतन चन्द जी आये हैं जो कन्या कुमारी तक घूम

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 10-8-1980

भजन बिन जीवन हैं निष्फल
मृग तृष्णा मरुस्थल भूमि, सार हीन निरजल ।
काल कर्म माया बरियाई, फांसे जीव निरबल ।
संभल संभल कर पग को धरना, कहीं न जाना फिसल ।
भजन प्रताप बचे कोई प्रानी, शब्द के मार्ग चल ।
राधास्वामी दीन सहाई, अपना दे निज बल ।

दाता दयाल का एक शब्द मुझे हर समय याद आता रहता है ।

छिन-छिन उमर घटत दिन राती, कभी सांझ कभी परभाति ।
माया मोह महा उतपाति-इनसे लगा मत लगन फ़कीरवा ।

उमर गुज़र गई जिन्दगी बदलती हुई चली आ रही है। आज यह शब्द सुना कि भजन के बिना जिन्दगी निष्फल है। मैंने भजन करते हुए आयु गुज़ार दी। भजन कहते हैं लीन होने को। लीन होने यानि धुन अनहद के सुनने को। जब इन्सान मन को छोड़ कर अर्थात मन के विचारों को भूल कर बाकी जो उसकी अपनी अवस्था रह जाती है उस अवस्था में ठहरता है तो उस ठहरने का नाम भजन है।

"मृग तृष्णा मरूस्थल भूमि, सार हीन निरजल।"

जिस तरह से चमकती तो रेत ही है मगर हिरन उसे पानी समझ कर उसके पीछे दौड़ता है और दौड़ २ कर मर जाता है। ऐसे ही हम लोग इस मन के चक्कर में आ कर तरह-२ के विचार दोड़ाते हैं। कभी कहीं, कभी कहीं, मगर जब इन्सान को मन के रूप का पता लग जाता है तो फिर वह मन माया के पीछे नहीं दौड़ता बल्कि भजन द्वारा अपने आप में ठहर जाता है।

आज यहां मानवता प्रचारक संघ के श्री रतन चन्द जी आये हैं जो कन्या कुमारी तक घूम

कर आ रहे हैं और स्कूलों में तथा भिन्न-२ स्थानों पर मानवता का प्रचार करते हैं। मैंने भी मानवता की अवाज़ उठाई। क्यों ? क्योंकि जिस तरह के मानवीय मन के विचार होते हैं उस के अनुसार वह अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता व काम करता है। इसलिये मैंने अनुभव के बाद मन को ज़िन्दगी में सुखी व शांत रहने के लिये 1945 में इन्सान बनो की अवाज़ उठाई। मैंने बहुत कुछ कहा और किताबें लिखीं। ज़िन्दगी में बहुत कोशिश की कि इन्सान को ठीक रास्ता दिखाऊं मगर दुनियाँ का क्या बना। क्या दुनियां इन्सान बन गई ? मैं देखता हूं मेरा अनुभव सिद्ध करता है कि मैं असफल रहा। इस लिये मैंने यह समझा कि यह मेरा अपना ही एक विचार, वहम और जनून है, मैंने जो कुछ भी किया या यह करते हैं अपने ही मन के भाव या विचार के प्रभाव में आकर करते हैं और अपने ही दिल को लगाने, समय काटने व पेट भरने के लिये करते हैं। हर एक आदमी अपने ही मन के कर्मों व ख्यालात को भोगता है।

सिद्ध हुआ कि जो किसी का सुधार करना

चाहता है वह अपने ही वहम और धुन में फंसा हुआ है। इसलिये सन्तों का उपदेश और मानवता की शिक्षा केवल उन आदमियों के लिये है जो चाहते हैं कि उन को सुख और शान्ति मिले वरना जिस को गरज़ नहीं है वह किसी की बात कब सुनता है। जो नहीं चाहते उन को तुम लाख कोशिश करो सिर पटक कर मर जाओ कोई नहीं सुनता। मैं तो थक गया, देखो दुनियां में कितने उपदेश देने वाले हैं। कहीं गीता का प्रचार है, कहीं किसी धर्म ग्रन्थ का प्रचार है कहीं कुछ है, मगर सुनता कौन है! तो इसका इलाज क्या है? इलाज कुदरत करेगी। इन्सानी नसल पर मुसीबत आयेगी और जब दुःखी होंगे मरेंगे, कटेंगे, रोएंगे फिर वे सोंचेगे, तब शायद किसी को समझ आयेगी। ये मेरी अपनी ज़िन्दगी का तजुर्बा है।

मैंने इन्सान बनो को क्या समझा? इन्सान किसे कहते हैं? कबीर साहिब ने कहा है।

गुरु पशु, त्रिया पशु, वेद पशु, नर पशु संसार।
मानुष ताहि जानीये जामें बिबेक विचार।
मनुष्य वह है जिस में समझ और विवेक है।

कर आ रहे हैं और स्कूलों में तथा भिन्न-२ स्थानों पर मानवता का प्रचार करते हैं। मैंने भी मानवता की अवाज़ उठाई। क्यों ? क्योंकि जिस तरह के मानवीय मन के विचार होते हैं उस के अनुसार वह अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता व काम करता है। इसलिये मैंने अनुभव के बाद मन की ज़िन्दगी में सुखी व शांत रहने के लिये 1945 में इन्सान बनो की अवाज़ उठाई। मैंने बहुत कुछ कहा और किताबें लिखीं। ज़िन्दगी में बहुत कोशिश की कि इन्सान को ठीक रास्ता दिखाऊं मगर दुनियाँ का क्या बना। क्या दुनियां इन्सान बन गई ? मैं देखता हूं मेरा अनुभव सिद्ध करता है कि मैं असफल रहा। इस लिये मैंने यह समझा कि यह मेरा अपना ही एक विचार, वहम और जनून है, मैंने जो कुछ भी किया या यह करते हैं अपने ही मन के भाव या विचार के प्रभाव में आकर करते हैं और अपने ही दिल को लगाने, समय काटने व पेट भरने के लिये करते हैं। हर एक आदमी अपने ही मन के कर्मों व ख्यालात को भोगता है।

सिद्ध हुआ कि जो किसी का सुधार करना

चाहता है वह अपने ही वहम और धुन में फंसा हुआ है। इसलिये सन्तों का उपदेश और मानवता की शिक्षा केवल उन आदमियों के लिये है जो चाहते हैं कि उन को सुख और शान्ति मिले वरना जिस को गरज़ नहीं है वह किसी की बात कब सुनता है। जो नहीं चाहते उन को तुम लाख कोशिश करो सिर पटक कर मर जाओ कोई नहीं सुनता। मैं तो थक गया, देखो दुनियां में कितने उपदेश देने वाले हैं। कहीं गीता का प्रचार है, कहीं किसी धर्म ग्रन्थ का प्रचार है कहीं कुछ है, मगर सुनता कौन है! तो इसका इलाज क्या है? इलाज कुदरत करेगी। इन्सानी नसल पर मुसीबत आयेगी और जब दुःखी होंगे मरेंगे, कटेंगे, रोएंगे फिर वे सोंचेगे, तब शायद किसी को समझ आयेगी। ये मेरो अपनी ज़िन्दगी का तजुर्बा है।

मैंने इन्सान बनो को क्या समझा? इन्सान किसे कहते हैं? कबीर साहिब ने कहा है।

गुरु पशु, तिया पशु, वेद पशु, नर पशु संसार।
मानुष ताहि जानीये जामें विवेक विचार।
मनुष्य वह है जिस में समझ और विवेक है।

जिसके मन का विकास हो चुका हो इन्सानी ज़मीर या हमारी Consciousness के चार भाग हैं। बुद्धि, ज्ञान, विवेक और अनुभव। बुद्धि और चीज़ है, ज्ञान और चीज़ है, विवेक और है, अनुभव और है। एक होती है बुद्धि या अकल और एक होता है विवेक। अकल तो प्रत्येक जानवर में है हर एक आदमी पशु पक्षियों और वृक्षों आदि में भी बुद्धि है। प्रत्येक में बुद्धि मौजूद है। तुम कहोगे वृक्षों व पक्षियों में भी बुद्धि है? हां लाजवन्ति के पौदे को यदि मनुष्य हाथ लगाये तो वो सुकड़ जाता है क्योंकि उसके हाथ से जो हवा निकलती है उसको वो पसन्द नहीं करता। औरत हाथ लगाये तो नहीं सुकड़ता। पक्षियों में एक बया होता है अपना गौंसला बहुत सुन्दर बनाता है उसमें रोशनी के लिये जुगनु को अन्दर रख लेता है। पक्षियों और पशुओं में विवेक पैदा नहीं होता। ये विवेक, ज्ञान और अनुभव केवल इन्सान के अन्दर पैदा होता है व आताहै। जिस मनुष्य में विवेक नहीं है वह हैवान के बराबर है उसको तुम इन्सान नहीं कह सकते चाहे देखने में वह इन्सानी शकल वाला है मगर वह इन्सानी शकल में पशु है। शब्द में आया है।

भजन बिन जीवन है निष्फल

जीवन निष्फल कब होता है। जब हमारा मन किसी बाहर की चीज़ की ओर दौड़-दौड़ कर उसको प्राप्त करने के फिक्र, चिन्ता व ग़म में लगा रहता है वो जीवन का निष्फल होना है। हम मृग तृष्णा अर्थात हिरण का चमकती रेती के पीछे भागने, अपने मन के विचार व आशाओं में फंसे हुए उनके पीछे दौड़ते हैं। मन की आशाओं से परे हटकर अपने आप में ठहर जाना और इसकी चालों के पीछे न दौड़ना और मन के चक्कर में आकर फिक्र व ग़म न करना, ये है भजन। मगर यहां तक पहुंचने के लिये मंजिलें हैं। पहले शारीरिक भावनाओं को रोकना पड़ेगा। फिर मन के संस्कारों व संकल्पों को छोड़ना पड़ेगा आदि २। बिना समझ और विवेक के मनुष्य का जीवन बिल्कुल निष्फल है वह धोखा खाता है चक्कर भी खाता है। अपने मन के चक्कर में आकर दुःख सुख उठाता है और अपने आप में जो वो स्वयं सुख

व खुशी आनन्द और शान्ति स्वरूप है उसमें नहीं ठहरता। विवेक न होने से अपने आपको गुरु के साथ, किसी बड़े आदमी के साथ या मज़हबी पुस्तकों के साथ बांधता है और उन के कहे हुऐ को दोहराता है बो पशु के समान है। हम लोग गुरु पशु हैं, त्रिया पशु हैं, गुरु के रूप को न समझना गुरु को ही जफ़ा मारना ये गुरु पशुपना है। इस प्रकार के अविवेक की वजह से ही देख लो! कश्मीर में मुहम्मद साहिब का एक बाल गुम हो जाने पर हजारों आदमियों का खून हो गया। मस्जिद की एक ईंट गिर जाये या कुरान शरीफ, रामायण या ग्रन्थ साहिब के एक दो पन्ने फट जाएं तो मज़हबी दुनियां के पशुओं के सींग क्या-क्या गुल नहीं खिलाते। क्या कुछ खून खराबा नहीं होता। मैं भी गुरु पशु था। मैं इन्कार नहीं करता मगर दाता की दया से और आप सत्संगियों की सेवा करने से मन व माया के रूप की समझ विवेक आ जाने से मेरी आंख खुली। तब मैं मन को छोड़कर अपने आप में ठहरने के योग्य हुआ। औरत को औरत के विचार से न देखकर उसके पीछे दौड़ना, उसका अर्थ है त्रिया पशु। ऐसे आदमी को औरत जूते भी मारती है मगर काम के

बस में हुआ २ जूते भी सहता है। जो गांधी जी और दूसरे महात्माओं के साथ बन्धे हुये हैं उनका परिणाम भी यही होता है कि इन्सान पक्षपाती हो जाता है द्वेषी हो जाता है। वह अपने विचार को अच्छा समझ कर दूसरों की बुराई करता है। महात्मा गांधी अपने समय के सच्चे राजनैतिक नेता थे। मगर रूहानी दुनियां के सन्त नहीं थे। महात्मा गांधी के काम ने देश के विभाजन के समय क्या कुछ नहीं कराया। हजारों की जानें गईं। जायदादों का नुक्सान हुआ और हम लोगों को जो तक्लीफ हुई वो सब जानते हैं। उनका काम राजनीति में सराहने योग्य था। उन्होंने मरन ब्रत हड़तालें Non co-opration समय के विचार से जारी की [illegible] कुछ कर गये वो उ[illegible] मगर इस समय के लिये नहीं। हम [illegible] करते हैं। मगर उन के कामों के आशय का न समझते हुए जो काम उन्होंने किये हैं अगर वह काम अब करते हैं तो लाभ नहीं होगा। वैसा ही करने वाले ये सब पशु हैं। ये बैल की भांति बंध हुये हैं और जब तक विवेक नहीं है वह इन्सान नहीं है। कबीर साहिब का एक शब्द है जिस में उन्होंने

यही कहा है कि हम सब एक जगह बंध गये हैं। टेकी हो गये हैं। विवेक से काम नहीं लेते।

जग में मानव कोई न देखा,
जो देखा सो बैल बना है।
बैल पशु के रूपा।
बैल समान फिरे नित डोले,
क्या परजा क्या भूपा।
कोई बैल बना गौरख का,
कोई बैल शंकर का।
कोई बैल है रीत रसम का,
कोई मिट्टी कंकर का।
कोई बैल है चार वेद का,
कोई षड़ दर्शन का।
अपनी किसी ने खबर न पाई,
न मुख दर्पण का।
[illegible] बैल पंथ में डोलें,
भेष भिखारी लाखों।
ये सब पशु हैं नर नहीं कोई,
देख ले अपनी आखों।
गुरु पशु, नर पशु, त्रिया पशु,
वेद पशु संसार।
मानुष सोहि जानिये,
जामें विवेक विचार।
कहें कबीर सुनो भाई साधो,

बैल से बच कर रहना।
पक्षपात की सींग अड़ेगी,
दुःख कलेश क्यों सहना।

कबीर साहिब के कहने का सारा अर्थ ये है किसी गुरु, किसी बड़े आदमी या किसी मज़हब के पशु मत बनो। इन्सानियत के पशु बनो। विवेक और समझ के पशु बनो और अनुभव को अपनाओ। दुनियां में हरेक काम विवेक के साथ होना चाहिये। विवेक क्या है आत्मा और अनात्मा या आत्मा या मन की समझ प्राप्त करना विवेक है। इस विवेक ने मेरे कर्मों पर कैसे असर किया? इससे मुझे क्या मिला? मुझे समझ आ गई कि इन्सान के संकल्प और विचार में बड़ी ताकत है। ये विवेक कैसे मिला? जिन्दगी के तजुर्बे से। कि स्वप्न का विचार जो हमारे वश में नहीं है या जो हम नीयत से नहीं करते वह हमारे शरीर पर असर करता है। स्वप्न में हमें क्रोध आता है, किसी को मुक्का मारते हैं तो हमारा हाथ हिल जाता है। कोई डरावनी शकल देखते हैं हम डर जाते हैं हमारी ज़वान बड़बडा जाती है। विचार से औरत

बना लेते हैं हमारा वीर्य निकल जाता है । तो जाग्रत में हम जो सोचते हैं विचार करते हैं, उसका असर हम पर क्यों नहीं आयेगा । इसलिये जाग्रत में अपने भाव शुभ रखता हूं । कल्याणकारी, सुख और शान्ति देने वाले विचार रखता हूं । अपने मन से किसी से नफ़रत, द्वेष, चारसौबीस, हेरा फेरी, घृणा, हस्द, कीना, किसी के साथ चालाकी किसी के साथ क्रोध व नफरत नहीं करता । मगर किसी समय गिर भी जाता हूं । इसी प्रकार अपने कर्म ठीक करता हूं और अपने मन को साफ़ रखने की कोशिश करता हूं । जो व्याक्ति ऐसा करता है मैं उसको मानव समझता हूं । उसको विवेक आ गया । चाहे वह मन से गिरने से बच गया और उसके कर्म आत्मा के स्वभाव के अनुकूल हो गये । ये संसार मनोमय है । ये दुनिया विचार की है, संकल्प की है । दूसरे अर्थों में माया की दुनिया है । जब जैसा जिसका विचार होता है उसके विचार के अनुसार उसकी ज़िन्दगी या संसार बनता है और जिस प्रकार का विचार किसी को दिया जाता है अगर वह उसको स्वीकार

करले तो उसकी ज़िन्दगी बदल जाती है व वैसी ही बन जाती है । जैसा ख्याल वैसा हाल । जैसी मति वैसी गती ।

उदाहरणतय लोकमान्य तिलक ने सब से पहले आज़ादी का विचार दिया । देखो उसका कितना विचार फैला कि स्वराज्य मिल गया । तो हमारी मुसीबतों व दु:खों का कारण क्या है ? क्योंकि हमारा ख्याल ठीक नहीं । जिस काम को हम करते हैं उस में हमारी शुभ भावना नहीं ।

विचार की शुद्धी के लिये हो हिन्दुओं में सोलह संस्कार बनाये गये हैं । मानवता के उपदेश के लिये सबसे पहला जरूरी बुनियादी विचार ये है कि सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा किया जाये । तब ही वह हमारे व देश के लिये लाभदायक सिद्ध होगी । आज कल कोई ऐसा घर नहीं जिसको अपनी सन्तान से शिकायत नहीं । विशेष २ को छोड़ कर दुनियां में देखो हर जगह नौजवान लड़के क्या कर रहे हैं ? क्योंकि ये खुदरौ सन्तान हैं । हम अपने स्वाद के लिये

औरतों के पास जाते हैं। बच्चा पेट में आता है। हमने नीयत से तो नहीं बच्चा पैदा किया। आदमी और स्त्री अपने आप को वश में नहीं कर सके। इस लिए वे मिले इस लिए ये आशा करना कि जो खुदरौ सन्तान पैदा हुई है ये अपने आप को वश में कर सकेगी ये नहीं होगा।। ये नहीं होगा ।।। वह अपने लिये देश के लिये या संसार के लिये कभी भी लाभदायक नहीं होंगे। ये मैं अपने तजुर्बे के अधार पर कहता हूं। वे बच्चे समय से पहले कामी हो जाऐंगे। मगर इसमें बच्चों का कोई दोष नहीं है। मां बाप जब बच्चा पेट में होता है भोग करते रहते हैं। मां कामातुर होती है उस का असर उस बच्चे पर पड़ता है। वह बच्चा जब पैदा होगा समय से पहले कामी हो जायेगा और बुरी बातें करेगा। ये है जो मैं चेताना चाहता हूं। जैसा ख्याल वैसा हाल। ये जितना दोष है सब हमारा अर्थात मां बाप का है। अगर किसी का लड़का खराब है तो मैं कहूंगा मां बाप खराब हैं। यदि घरेलू सुख शान्ति चाहते हो तो औलाद को औलाद के विचार से शुभ संकल्प रख कर पैदा करो। विषय विकार से

बचो। असलीयत को पर्दे में रखने की वजह से आज कल मजहबी अज्ञान से इन्सानी नसल भिन्न २ मजहबों व पंथों बट गई। कोई देवी का पुजारी कोई कृष्ण जी का पुजारी, कोई राम जी का पुजारी कोई किसा का पुजारी। ये ऐसा क्यों है ? क्योंकि विवेक नहीं है समझ नहीं है। मन की तरगों में इन्सान बह जाता है। मैं आया ही इसलिये हूं कि भ्रम अज्ञान और जहालत जो मजहबों, पंथों और गुरुओं ने फैला कर हम गृहस्थियों को मूर्ख बना कर लूटा है। इस को साफ कर जाऊं। ये ही मेरे नाम मेरे गुरु महाराज की आज्ञा है। एक शब्द में वे लिखते हैं।

तेरा रूप है अद्भुत अवरज, तेरी उत्तम देही,
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही।

इस मजहबी दुनिया के झगडों को साफ करने और मजहबी द्वेष को मिटाने के लिये ही मैंने "इन्सान बनो" की अवाज उठाई है। यह इन्सानियत क्या है ? पूरी समझ प्राप्त करना क्या है ? असलीयत ये है कि ऐ इन्सान सब कुछ तेरे अन्तर है। तू अपना आप ही है ! तू भ्रम व मन के

चक्कर में पड़ कर दूसरों का मौहताज हुआ फिरता है। कभी औरत के पीछे दौड़ता है, कभी हकूमत के पाछे दौड़ता है कभो किसो चीज़ के पीछे दौड़ता है। इसो लिये इन्सानी शकल वाले अज्ञानियों को विवेक देने के लिये महा पुरुष ऋषि और सन्त प्रकट होते हैं, सत्संग कराया जाता है और ये भजन रखा हुआ है ताकि जीव अपने मन के चक्कर में आकर सुख दुःख न उठाये। अपने अन्तर प्रेम करना सीखे और अपने आप में ठहरने का नाम भजन है। ये मैंने समझा।

काल कर्म माया, बरयाई फंसे जीव निर्बल।
संभल संभल कर पग का धरना कहीं न जाना फिसल।

माया यानि, बुद्धि, काल इन सब ने हम जीवों को काबू किया हुआ है। माया क्या है? हमारी बुद्धि। इस बुद्धि को साफ करने व असलियत को समझाने के लिये ही किसी कामिल इन्सान के सत्संग की ज़रूरत है ताकि मन के चक्कर में आकर फंसने से बच सको, इन्सान बन कर रहो शान्ति

का जीबन गुज़ारो ताकि तुम्हें मज़हबी शान्ति, घरेलू शान्ति और रूहानि शान्ति मिल सके।

सब को राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक १७-८-१९८०

मेरा अपना जीवन मेरे सामने आता है। बुढ़ापा आ गया। जो सोचा था वो मिला। प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। इसलिए अब यह कर्म का चक्कर है। क्या मैं इस काम से सुखी हूं? अपना ही कर्म भोगता हूं। किसी पर मेरा कोई एहसान नहीं। आज दाता दयाल महर्षि जी का एक शब्द आप को सुनाना चाहता हूं।

तेरी काया में सत करतार, भटका क्यों खावे ॥
काया में है माया दाया, काया स्वर्ग दुवार ॥ भटका ०

काया सोध सोध निज काया, काया का भेद अपार ।: "
काया निरगुन सगुन है काया, काया ब्रह्म अपार ।। भटका.
काया मध्ये सहस कमल दल, काया में ओंकार ।। भटका'
सुन महासुन्न काया रहे, काया सोंहग सार ।। भटका.
सत्त पुरुष काया के बासी, अलख अगम का द्वार ।। भटका.
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, काया है टकसार । भटका'

मैं राम को मिलने निकला था। दाता दयाल के रूप में राम को समझ कर बाहर प्रेम करता था। काफी बर्षों किया। बाहर पूजने से प्रेम मिला, आनन्द तथा खुशी मिली मगर शान्ति नहीं मिली। शान्ति कब मिली? जब अन्तर में सच्ची समझ आई और निश्चय हो गया कि आदमी जिस को पूजता है वो बास्तव में उसके अपने ही मन के अन्दर है, बाहर नहीं। इन्सान को अपने मन के अन्दर ही किसी शाक्ति का एहसास हैं। वो वास्तव में उसको पूजता है। जब इस नुक्ते की समझ मुझे आई और इस सच्ची समझ को धारण किया तब मुझे शान्ति मिली।

दाता यही कहते हैं कि ऐ इन्सान! तेरी काया

में सब कुछ है। मुझे नहीं पता कि वो कैसे कहते हैं कि सब कुछ तुम्हारे अन्तर में है। मैं जिस तरीके से समझता हूं वो बता सकता हूं सुनो। कर्तार कहते हैं जो दुनियां को पैदा करता है, जो सृष्टि को रचने वाला है, जो बाहर है वो हमारे अन्तर है, ।'जो ब्रह्माण्डे सो पिण्डे।" अब तुम सोचो हमारे अन्तर कर्ता कौन है? हमारे अन्तर हमारा वीर्य सृष्टि रचता है, सन्तान पैदा करता हैं, इसलिए कर्ता का सूक्ष्म रूप हर प्राणी के अन्तर उसका वीर्य हैं। जो आदमी अपने वीर्य को बेफायदा नष्ट करते हैं वो ईश्वर द्रोही हैं। तुम कर्तार को पचासहज़ार अपशब्द कहो तुम्हारा कुछ नहीं विगड़ेगा। मगर यदि तुम अपने वीर्य को वेफायदा नष्ट करते रहोगे तुम दीवाने, वहमी, पागल या बीमार हो जायोगे। तो कर्तार का एक रूप तो तुम्हारा वीर्य हुआ।

दूसरे कर्तार अपने संकल्प से संसार रचता हैं। कैसे रचता है? अगर उसने ऊंट ऊंचा बनाया तो उसकी गर्दन लम्बी कर दी। हाथी बनाया तो

उसको सूंड दे दीया, सांप पैदा किया तो उसको पैर नहीं दिये मगर उसकी पस्सलियों में शाक्ति दे दी। यानि जो काम उसने किया वो अकल और समझ बूझ से किया । ऐसे ही इन्सान के अन्दर हमारा मन जो है यह कर्तार का सूक्ष्म रूप है । यही संकल्प से हमारी अपनी दुनियां रचता है । यदि हम सही बुद्धि, सही ख्याल व अकल से से काम लेकर इसको शुभ संकल्प दें तो हम अपने जीवन को आदर्श बना सकते हैं। तीसरे कर्तार है क्या ? संसार की उत्पति किस से होती है ? प्रकाश से, रोशनी से। तुम आपने आप को देखो, अगर तुम सोचो कि हम सब कहां से आये ? हम सभी मां के पेट से आये हैं कि नहीं, तो हमारे शरीर का जो आद है वो वीर्य का एक छोटा सा कोड़ा है जो आज छः फुट के हम युवक बने हुये हैं। हमारा असल है क्या ? वो वीर्य का कीड़ा है। वीर्य बनता है खून से, खून बनता है अन्न से, अन्न कोई भी पैदा नहीं हो सकता जब तक सूर्य, चांद सितारों की किरणें न आयें। इसलिए हमारा कर्तार प्रकाश, नूर या ब्रह्म है। इसको

कोई लफज़ दे लो। इसलिए अगर कोई कर्तार को देखना और कर्तार का रूप होना चाहता है तो एक तो उसको अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को रखना चाहिए । दूसरे सही बुद्धि रख कर सही संकल्प रखना चाहिए । तीसरे प्रकाश यानि नूर का साधन करना प्रकाशमय होना चाहिए। यही हिन्दुओं का गायत्री मन्त्र है। इसलिए मैं समझता हूं कि हमारो ही काया में कर्तार है। एक कर्तार तो बाहर सारी सृष्टि का रचने वाला है। उसी का अंश हमारे अन्दर है। "जो ब्रह्मण्डे सो पिण्डे"।

इस तरह मुझे यकीन है कि ऐ इन्सान। जो कुछ है तेरे अपने ही अन्तर में है बाहर नहीं। जिस तरह बड़ के बोज में तमाम वृक्ष मौजूद है। मगर इसको जब तक बीजोगे नहीं, हालात तथा बाक्यात अनुकूल न हों वो बड़ा वृक्ष नहीं बन सकता। इसी तरह से एक इन्सान के अन्दर तमाम संसार की कायनात बीज रूप में मौजूद है। इसको Develop करना है। इसको develop करने

के लिए हैं सत्संग, साधन और अभ्यास । तो हमारे ही शरीर में हमारा प्रकाश रूपी ब्रह्म हमारे अन्तर है मगर इसकी समझ बिना सत्संग के आती नहीं । इसीलिए कहा जाता है सत्संग ।

साईंस ने साबित किया है कि इन्सान का शरीर रेडियो स्टेशन है । इसमें से Rays यानि धारें निकलती रहती हैं और वो दूसरों पर असर करती हैं । बुरे की भी तथा अच्छे की भी । वो अपना प्रभाव रखती है ! प्रत्येक प्राणी अथवा कोई भी जीव हो उसके अन्दर से जो कुछ भी उसके गुण-दोष के प्रभाव है वो निकलते रहेंगे । यदि मैं ही अन्तर से कपटी, कामी व चरित्रहीन हूं और गुरु का स्वांग भर लिया तो बाहर से मैं लाख उपदेश करता रहूं उसका प्रभाव क्या होगा । जो लोग मेरे पास आयेगें वो क्या ग्रहण करेंगे । मेरे अन्दर से तो वही धारें निकलेगी जो मेरे अन्तर हैं । इसलिए सत्संग भी किसी पूर्ण, नि:स्वार्थ और निष्काम पुरुष का हो तब आपको लाभ पहूंच सकता है और वही सच्चाई वयान कर सकता है ।

मैं बड़े संवेदनाशील हृदय से कहता हूं कि आजकल का गुरुवाद धोखावाद है । हम लोगों को कोई सच्चाई नहीं बताता । बिना सच्चाई को समझे तुम देखो इस समय धार्मिक झगड़े हो रहे हैं । भारतवर्ष के विभाजन के समय क्या हुआ ? अन्य देशों में क्या हो रहा है ? केवल इसलिए कि वो सच्चाई से अनभिज्ञ हैं । कोई मुहम्मद को पूजता है, कोई कृष्ण को पूजता है, कोई राम को पूजता है तथा कोई गुरु को पूजता है । वास्तव में वो किसी को बाहर से नहीं पूजता वो अपने ही मन को पूजता है । मैंने इस भेद को केवल इसलिए खोला कि संसार को सच्चाई का पता लगे और वो धर्म के नाम पर आपस में न लड़ें । दूसरों पर अपना बड़प्पन न जतायें और एक दूसरे से घृणा, द्वेष न रखें तथा देश में अशान्ति न फैले । दूसरे जिस बात को इन धर्मी और पन्थों ने पर्दे में रखकर हम भोले भाले गृहस्थियों को लूटा है, मैंने उसको स्पष्ट तथा खुले शब्दों में समझाने का यत्न किया है ताकि जीव लुट न जायें ।

लोग आते हैं मैं क्या दे सकता हूं। मेरे पास यही सच्चा ज्ञान व शुभ भावना है।

"मालिक तेरे भाने सर्वत्त का भला"

दुखी आदमी आते हैं। मैं सच्चे दिल से चाहता हूं उनका दुख दूर हो जाये। उनको सुख, शान्ति मिलें।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 7-8-1980

एक सतसंगी काफी अभ्यास करता था । उसके चित में आज पांच वर्ष से वैराग्य था और वह इस संसार में रहना नहीं चाहता था । कुछ दिन हुए उसने गाड़ी के नीचे आकर आत्महत्या कर ली । उस के रिश्तेदारों ने मुझ से पूछा कि इसकी अकाल मृत्यु हुई है इसलिए भेंवे (कुरुक्षेत्र) जाकर उसका क्रिया-कर्म किया जाए ताँकि उसके सदगति हो जाए । मैंने उन्हें कहा कि उसकी क्रिया-कर्म की ज़रूरत नहीं है, न भेंवे जाने की ज़रूरत है । क्योंकि अकाल मृत्यु तो वह होती है कि इन्सान को पता न हो और अचानक दुर्घटना हो जाए या चारपाई पर पड़े हुए

किसी ख्याल में उसकी मौत हो जाए, डूब कर या बिजली गिरने से मर जाए तो उसका क्रिया-कर्म भेंवे में ज़रूरी है। मगर जो व्यक्ति अपने दुनियां के सारे सम्बन्धों को छोड़कर स्वयं मरता हैं उसका क्रिया-कर्म या भेंवे जाने की जरूरत मेरी समझ में नहीं है। क्योंकि मरने से पहले उसके सारे सम्बन्ध संसार से खत्म हो चुके थे।

देखो ! लव, कुश की लक्ष्मण आदि से लड़ाई हुई। उसके बाद सीता जी, जब आई तो उसने कहा कि हे ! पृथ्वी माता ! अगर मैं सारी आयु सच्ची रही हूं तो मुझे अपनी गोद में जगह दे दे। ज़मीन फटी और वह उसमें समा गई। श्री राम चन्द्र जी परिस्थितियों से प्रभावित होकर वैराग्य में आकर भरत और शत्रुघन के साथ नाव में बैठकर सरजू नदी में डूब कर मर गए। पाण्डवों के बारे तुमने पढ़ा होगा कि महा भारत के युद्ध में 18 अक्षोहिनी सेना के आदमी मारे गए पांडवों को तो उदासी आ गई। और पांचों के पांचों हिमालय पर्वत में जाकर बर्फ में गलकर मर गए। उनका क्रिया-कर्म किसने किया ?

क्रिया-कर्म ज़रूरी है। मगर यह रीति रिवाज नहीं होना चाहिए। बल्कि मरने वाले का जो सच्चा हितैषी हो जैसे पुत्र, दोहता या दूसरे परिवार के आदमी। वे मरने वाले को सच्चे दिल से यह विचार दें कि हमारा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। तू अपने घर जा। मुझे याद है जब मेरी पहली पत्नी गुज़री तो मैंने उसका क्रिया कर्म किया। सुहाग की सारी वस्तुएँ दी, पाण्डे ने चावलों के आटे का एक बुत बनाया और मन्त्र पढ़कर मुझे कहा कि इस बुत के पहिले पैर काटो, फिर हाथ और उसके बाद गर्दन काटो। इसका क्या अभिप्राय है ? इसका मतलब यह है कि मरने वाले की जो इच्छा होती थी या जिस चीज़ से उसका सम्बन्ध था वह चीज़ें उसको क्रिया-कर्म में देनी चाहिए और साथ ही उसके पुतले के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था ताकि मरने वाली आत्मा को अगर वह वहां है तो यह मालूम हो जाए कि उन्होंने उसके साथ यह व्यवहार किया है ताकि उसका बन्धन रिश्तेदारों से छूट जाए।

मैंने अपनी स्त्री के मरने के उपरान्त गरुड़ पुराण

सुना और उसका सारांश एक गरुड़ पुराण नामी पुस्तक में लिख दिया। आजकल कुरुक्षेत्र आदि में जो अकाल मृत्यु वालों की क्रिया-कर्म की जाती है, वास्तव में इसलिए करते हैं कि पिछले समय में वहां महापुरुष रहते थे जो ब्रह्मनेष्ठी होते थे अर्थात प्रकाश या गायत्री का साधन करते थे। प्रकाश का साधन करने वालों में इच्छा शक्ति बहुत बढ़ जाती है और वह अपने ख्याल से मरने वाले की आत्मा को अपना ख्याल देते थे। मगर आजकल सधारणतया जो पाण्डे हैं वह साधन नहीं करते। शराब पीते हैं और मांस खाते हैं तथा धोखाबाजी करते हैं। फिर भेंवे (कुरुक्षेत्र) जाकर क्रिया-कर्म करने से क्या लाभ ? मगर यह एक रीति चली आती है और हम लकीर के फकीर हैं।

मेरा अपना तजुर्बा है, मेरी पहली पत्नी और अपने भाई की पत्नी के फूल लेकर मैं हरद्वार गया। गाड़ी से उतरा एक आदमी आ गया। कहने लगा कहां के वासी ? मैं सीधा सादा आदमी था मैंने उस को अपना नाम और अपने गांव का नाम बता दिया।

राधास्वामी !

पत्र मिला।

'जो चाहता है वो पाता है'

जिस के दिल में किसी चीज़ की सच्ची तालाश होती है कुदरत खुद व खुद उसकी गरज़ को पूरा करने का प्रबन्ध करती है। मेरे पास सिवाय अपनी जाति, ज़िन्दगी के अनुभव के और कुछ नहीं। दूसरों की कही कहाई, किताबों की लिखी लिखाई बातों की ओर मेरा ध्यान नहीं है न मैं कोई किसी को फूंक मार सकता हूं। Rediation (रेडीएशन) का कानून ज़रूर काम करता है। जिस तरह एक नौ-जवान खूबसूरत औरत को देखकर उसके मन में हलचल पैदा होती है। इसी तरह किसी आमल इन्सान की संगत से या उसकी बातों से अधिकारी इन्सानों के अन्दर शान्ति, समझ और ज्ञान का आवेग उभरता है। जिस तरह छोटे बच्चे को देखकर प्रत्येक व्यक्ति अपना आप भूल करके उसी की शक्ल अखतयार करके उससे बातें करता है ऐसे ही सत्संग

का प्रभाव होता है। मगर जिस तरह बच्चा जो बालिग नहीं हुआ या बूढ़े आदमी का दिल सुन्दर स्त्री को देखकर प्रभावित नहीं होता ऐसे ही जिसमें सच्चाई और शान्ति की छुपी हुई भावना नहीं होती उनको सत्पुरुषों या महापुरुषों के दर्शन करने और बातें सुनने पर भी कुछ नहीं होता उनकी हालत नहीं बदलती।

आप बड़ी खुशी से आइये। मैं बूढ़ा हूं लोग मुझे बहुत तंग करते हैं। फिर भी जो सेवा मैं कर सका कर दूंगा। मैं 16 अक्तूबर तक यहां हूं। फिर मैं कुछ दिनों के लिए दिल्ली जाऊंगा।

—आपका फकीर

होशियारपुर

प्यारे विश्वामित्र,

राधास्वामी !

पत्र मिला। आपने सुमिरन ध्यान के बारे बहुत कुछ पूछा। सुनो ! अपने जीवन का अनुभव कहता हूं जिन व्यक्तियों के ब्रह्मचर्य बचपन में गिरे या ज़्यादा विषय भोगा हुआ होता है उनको सुमिरन और ध्यान में विघ्न का आना अनिवार्य है। मैंने 1905 में नाम लिया। 1916 तक सिवाय रोने और प्रार्थना करने के और कुछ नहीं बना। आपकी बहन का लड़का विद्यासागर जब पढ़ता था वह एक दिन जब मैं समाधि में था मेरे पास आकर बैठा रहा, मुझे तो पता नहीं था। मेरी तरफ देखकर उसने घर जाते ही समाधि लगा ली। पंडित बली राम दौड़ा हुआ मेरे पास आया कि विद्यासागर पागल हो गया। कहता है मेरे अन्दर चांद, सूर्य और सितारे चमक रहे हैं। मैंने तो उसको नाम नहीं दिया था वो क्यों चमके ? क्योंकि उसका ब्रह्मचर्य कायम था।

दूसरी घटना और सुनाता हूं। मैं फरीदकोट में

हुए मरते हैं। सन्यासी का कोई क्रिया-कर्म नहीं। क्यों ? सन्यासी का मतलब ही यही है कि उसके मन के अन्तर संसार की इच्छाएं व सम्बन्ध न रहें। इस लिए जो आदमी संसार से विरक्त होकर किसी न किसी तरह अपनी जान दे देता है मेरी तुच्छ बुद्धि में उसके लिए क्रिया-कर्म की कोई जरूरत नहीं। वह तो पहले ही मुक्त है। कई महात्मा पुराने समय में अपनी मर्जी से प्राणायाम के तरीके से अपने शरीर को त्याग देते थे। अब वह स्वयं शरीर त्यागने की शक्ति तो रही नहीं इसलिए वह मौत का कोई न कोई कारण बना लेते हैं।

मेरे इस विषय को लिखने का कारण क्या है कि जिस व्यक्ति के अन्त:करण में जिस तरह की बासनाएं मौजूद होती है, अगर वह समाधि लगाता है वह साधन अभ्यास करता है तो वे बासनाएं बढ़ जायेंगी इसलिए मैं सारी दुनिया को जिस तरह दूसरे गुरु नाम देते हैं नहीं देता। मेरी शिक्षा यह है कि पहले अपनी वासनाओं को ठीक करो और यही बात हुजूर महाराज जी की पवित्र विभूति राय सालिग राम

साहिब जो राधा स्वामी मत के चलाने वाले हैं उन्हों ने अपनी प्रेम बाणी में लिखी है कि जिनके मन गन्दे हैं और वह अपने बुरे विचारों को दूर नहीं करना चाहते या उनसे दूर नहीं होते उनको यह साधन बिल्कुल नहीं करना चाहिए बरन् उनका बहुत ही नुक्सान होगा। यह बात एक पृष्ठ में दो बार लिखी है। हां अगर मन गन्दा है और आदमी अपने ग़लत विचारों को महसूस करके उनसे बचने की इच्छा रखता है कि यह बुराई उसमें न रहे फिर वह अगर अभ्यास करे तो उसे लाभ होता है।

जैसे मेरी अपनी ज़िन्दगी देखो। मैंने 16-17 वर्ष की आयु में चार पाप किये, छः महीने मांस खाया, तीन बार शराब पी, एक बार वैश्या के पास गया और एक बार जुआ खेला। उस कुकर्म के कारण मैं वर्षों रोया ताकि वे जो पाप मैंने किए हैं वह धुल जाएं इस सिलसिला में रोते हुए नींद आ गई तो दाता दयाल का रूप प्रगट हुआ तो फिर मैं उनकी शरण में गया। उनकी शरण में जाने से [redacted] वर्ष तक अपने आपको पापी समझकर हमेशा पुकार

किया करता था और अपने ख्यालातों को अपने ही शब्दों में गाया करता था। उस मेरे साधन का यह परिणाम निकला कि मैंने बाकी जीवन में कोई पाप नहीं किया। मेरे इस विषय को लिखवाने का यह आशय यह है। कि वह महात्मा गलती पर हैं जो बिना अधिकार व संस्कार के सबको यह साधन बताते हैं। सब से पहले आदमी को काफी समय तक सत्संग करना चाहिए ताकि उसे अपने भविष्य के जीवन को गुज़ारने का मार्ग मिल जाए। फिर उसे दीक्षित करना चाहिए। कबीर साहिब से धर्मदास 30 वर्ष तक नाम दान के लिए प्रार्थना करता रहा। 30 वर्ष के बाद उसे शिष्य बनाया। आजकल तो गुरुओं को अपना दायरा बढ़ाने का विचार हैं। जो भी आया उसे नाम २ और मैं देखता हूं कि मेरे पास नाम धारी आते हैं ये दूसरे व्यक्तियों से ज़्यादा दुःखी हैं। जिस तरह आजकल नाम दिया जा रहा है इससे ज़्यादातर नुक्सान पहुंच रहा हैं।

पढ़ने वालो! यह मेरा निजि अनुभव है। मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा है यही ठीक है।

घण्टे के बाद मैं भी उठा और वह भी उठा वह खुशी से नाचने लग गया और कहने लगा प्रकाश खुल गया, शब्द खुल गया। बलीराम हकीम वहां था उस ने कहा पंडित जी! हम आप के साथ रहते हैं, इतनी सेवा भी की, आपने इसको सब कुछ दे दिया और हमें कुछ नहीं दिया ? सुनो विश्वामित्र ! मैं धर्म से कहता हूं कि मेरे दिल में समाधि के समय ख्याल ही नहीं था कि वह है या कि नहीं। उसका शब्द प्रकाश कैसे खुल गया ? एक तो उसकी प्रबल इच्छा दूसरे उसकी लड़की ने उसको यह ख्याल दिया था कि फकीर चन्द के पास से तुमको कुछ मिलेगा।

Radiation का नियम काम करता है। हां, उससे मैंन पूछा था कि तुम्हारी बीबी है ? उसने कहा 20 वर्ष हो गये मर गई। मैंने कहा कि उस के बाद तुम्हारा चाल चलन कैसा रहा ? उस ने कहा 10 वर्ष तक तो मैं दूसरी स्त्रियों से मिलता रहा और 10 वर्ष से मैंने ब्रह्मचर्य रखा हुआ है। यह भोला नाथ दो वर्ष के बाद फिर मेरे मकान में फिरोजपुर आया। मैंने कहा कैसे आये ? कहने लगा शब्द, प्रकाश गुम हो गया। मैंने कहा बैठ जाओ। मैं कुछ लिख रहा था मैं लिखता रहा मैंने ख्याल नहीं किया, न पूछ ही

मारी । 5 10 मिनट के बाद उसने कहा मेरा शब्द भी खुल गया और प्रकाश भी खुल गया। वों सिर निवा कर चला गया ।

विश्वामित्र ! इन मेरे अनुभवों से तुमको विश्वास होना चाहिए कि मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य और सच्ची लगन हो और साथ ही किसी साधक की संगत इन्सान के अन्तर यह नूर, प्रकाश या शब्द खोल सकती है । अगर किसी के अन्दर के यह दृश्य मानलो नहीं खुलते तो घबराने की आवश्यकता नहीं । सुमिरन, ध्यान का ध्येय तो मन की वृतियों को एकाग्र करना है। एकाग्रता की आवश्यकता है । अन्तर के दृश्यों का जितना खेल है यह सब इन्सान की शारीरिक प्रकृति के अनुसार होता है ।

एक और उदाहरण सुनो ! पडित मामचन्द जो 35 वर्ष मेरे साथ रहकर के मेरे सफर में मेरा सहकारी रहा वो दाता दयाल का शिष्य था । मैं गिदरबाहा में स्टेशन मास्टर था और वह टिकट कुलैक्टर था । उसने कहा कि मेरा प्रकाश और शब्द नहीं खुला । मैंने उसको देखा और कहा कि यह नहीं

खुलेगा। उसने पूछा क्यों ? मैंने कहा इसका जवाब अब में तुमको नहीं दूंगा। वह दाता दयाल के पास गया और उनको कहा कि फकीर चन्द यह कहता है कि मेरा शब्द, प्रकाश नहीं खुलेगा। दाता ने उत्तर दिया उस बावले फकीर से क्यों तुमने पूछा ?. खुल जाएगा। दाता दयाल का चोला होता हुये उसका शब्द प्रकाश नहीं खुला फिर वह कई और संतों के पास गया वहां भी नहीं खुला। मेरे पास आया पूछा क्या कारण है ? मैंने कहा तुमने बचपन में अपना ब्रह्मचर्य खोया है और गृहस्थ में भी ज्यादा भोग किया अगर नहीं खुला तो कोई बात नहीं अन्तिम अवस्था शान्ति है। इसलिए यह उदाहरणें देकर जो मेरी अपनी ज़ाति ज़िन्दगी के अनुभव हैं वो तुमको कहता हूं कि अगर मन में शान्ति है तो अन्दर के दर्जों के खुलने की चिन्ता बेकार है। मगर सुनो ! मैं दाता दयाल के पास लाहौर में था क्योंकि मेरा विश्वास था कि दाता दयाल मालिक के अवतार हैं मैं जब वहां उनके पास होता तो अभ्यास नहीं करता था यह समझ कर कि अब अभ्यास की क्या आवश्यकता है। दाता ने पूछा अभ्यास करते हो ? मैंने कहा हजूर के

दरबार में आकर अभ्यास की आवश्यकता क्या है। आपने फरमाया बावले ! अभ्यास किया कर, सुमिरन ध्यान किया कर यह बुढ़ापे में तेरे काम आएगा। अब बुढ़ापा है शरीर कमज़ोर हो रहा है और मन बलवान हो रहा है। सुमिरन या ध्यान जब मन के अन्दर खलबली होती है तो वो मेरी सहायता करता है। इसलिए तुमको कहूंगा कि नज़ारों आदि की चिन्ता छोड़ कर दोनों आंखों के बीच में अपनी सुरत को गाड़कर वहां लम्बा लम्बा रा-धा—स्वा-मी करते हुए मन को स्थिर रखने का साधन ज़रूर किया करो और ध्यान भी जब करते हो तो गुरु मूर्त के मस्तक और आंखों को अपने अन्तर की आंख से देखते हुए उससे अपनी सुरत को गाढ़ा करो। अगर इस सुमिरन से मन न ठहरे तो अपनी आंखें खोल कर नाक की कोंपली पर ध्यान लगाकर वहां रा-धा-स्वा-मी- ख्याल के साथ जपा करो। एक दो मिन्ट में सुरत ऊपर चली जाएगी और मस्ती आएगी फिर ऊपर आंखों के बीच में सुमिरन करो अगर महां भी आपको असफलता हो तो नाम माला यानि अपने विचार को नाभि के स्थान पर हृदय

के स्थान पर धा, कंठ के स्थान पर 'स्वा' और नैनों के बीच में 'मी, से ऊंचा जाप किया करो जुवान से नहीं केवल ख्याल से ।

इस कर्म से तुमको मन को चंचलता दूर करने की आदत हो जायेगी और शारीरिक कमज़ोरी या बुढ़ापे के समय तुम्हारी सहायता होगी । मुझे अफसोस है कि तू कुछ समय मेरे साथ नहीं रहा । केवल 6-7 दिन कैनेडा में रहा वहां मेरे सत्संगों से तुम्हारे वहम और भ्रम चले गये मगर मन की एकाग्रता के विना वहम, भ्रम चले भी गये हुए हों तव भी एक प्रकार की अशान्ति रहती है ।

विश्वामित्र ! मैंने तुमको हर पहलू से कैनेडा में प्रयत्न किया कि आप की बुद्धि निश्चयात्मक हो जाये और आज इस पत्र में मैंने मन की शान्ति के लिए बहुत कुछ कह दिया । जब मन ठहरने लग जाएगा अपने अन्तर में प्रकाश और शब्द स्वयं प्रगट हो जाएगा ।

मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि विश्वामित्र, तुम को सेहत, दौलत और मन की शान्ति मिले। ज़िन्दगी क्या है "लब खुले और बन्द हुये यह राज़े ज़िन्दगानी है"। जब तक ज़िन्दगी है इसको यम और नियम दूसरे शब्दों में सुमिरन और ध्यान आदि से आनन्द से गुज़ारो। बाकी दूसरी बात जो तुमने पत्र में लिखी है उसका जवाब Trust देगा।

—आपका फकीर

क्रियात्मिक जीवन

साधारणतया जो आदमी सुख आनन्द और शान्ति के इच्छुक हैं और इसके लिए अपने-अपने विश्वास के अनुसार साधन भी करते हैं और अन्तर के अभ्यास से उनको रोशनियां, शब्द योग के दृश्य भी नज़र में आते हैं उनको भी चाहे वे साधु हों, गृहस्थी हों, गुरु हों या चेले हों या किसी भी लाईन पर चलने वाले क्यों न हों, ज़िन्दगी के अनुभव में क्रोध, चिन्ता, विक्षेप और अशान्ति पैदा होती रहती है। लोग जब किसी महापुरुष की जीवनी लिखते हैं तो अपने विश्वास व श्रद्धा के अनुसार या भाव वश भिन्न-भिन्न प्रकार की ऐसी बात लिख देते हैं जो उनकी महानता को बढ़ाते हुए लोगों के ध्यान को किसी विशेष विचार की तरफ खींचते हैं। परिणाम यह निकलता है कि इन्सान जो अभी क्रियात्मिक नहीं है उसका विश्वास कुछ दिनों या वर्षों बाद भग हो जाता है। मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी इस बात की

खोज की कि मेरी रहनी इस तरह की हो जाये कि किसी समय भी घबराहट या बेचैनी न हो। मगर तजुर्बा ज़िन्दगी में यह सिद्ध हुआ कि जाग्रत अवस्था में या स्वप्न अवस्था में यह असम्भव है कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी में सदा के लिए इस शान्ति को कायम रख सके। इस लाईन के पिछले या वर्तमान पथ पदर्शक व अन्य साधु व जो इस शान्ति के मार्ग में आगे थे या हैं इनकी अपनी ज़िन्दगी के हालात मैंने बहुत सुने व देखे और साथ ही अपनी ज़िन्दगी की निरख परख मेरे सामने है। मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि कोई इन्सान शारीरिक व मानसिक अवस्था में रहता हुआ शान्ति को कायम नहीं रख सकता। मेरा सम्बन्ध राधास्वामी मत या सन्तमत से है अथवा सन्तों की राय, उन्होंने अपने अनुभव के बाद यह कहा कि ज़िन्दगी की दो अवस्थाएं हैं। एक काल और एक अकाल। काल की अवस्था में जाग्रत स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था है, या जाग्रत, स्वप्न सुषुप्ति एक शारीरिक और एक मानसिक, इन अवस्थाओं में रहता हुआ व्यक्ति चाहे कोई भी हो दुःख सुख, खुशी गमी, चिन्ता, अचिन्ता से कभी मुक्त नहीं रह सकता।

आज एक सतसंगी राम प्रकाश नामी सतसंग के विचार से मेरे पास आये। उनके आने का कारण प्रगट रूप में उनको मालूम है। अभ्यास में काफी उन्नति कर जाने के बाद भी उनको जीवन के व्यवहार में अशान्ति आती रहती है। यह क्यों है ? इसलिए कि जिस अवस्था को हमने इष्ट बनाया हुआ हैं वह अवस्था काल की है और उस हालत में सिवाय गुरु के और कोई रक्षक नहीं है। जिसके ऊपर सतगुरु का हाथ है वह हाथ ऐसी अवस्था में गुरु के याद करने पर जल्दी सहायता करता है।

गुरु धरा शीश पर हाथ क्यों तू सोच करे।
गुरु रक्षा हर दव साध उनसे काल डरे।

ऐसी स्थिति में सिवाय गुरु के और कोई रक्षक नहीं ! जिसका अनुभव राम प्रकाश को स्वयं हुआ। राम प्रकाश ने मालूम किया कि इतनी गर्मी में यात्रा करने पर भी 'ध्यान योग' की शक्ति से उसने अपने इस कष्ट को महसूस नहीं किया जिससे वह भयभीत था। वह इसकी रक्षा करने वाला फकीर चन्द नहीं था जो इस समय बोल रहा है बल्कि वह सतगुरु था जो इसके अन्तर में है। गुरु या मालिक वास्तव में इन्सान के अन्दर है, उसके कई रूप हैं। जो

व्यक्ति के अपने ही अन्तर है, एक ध्यान का रूप, एक विचार का रूप, सार समझ का रूप, एक शब्द का रूप, एक सुमिरन का रूप। जैसा जैसा रूप किसी व्यक्ति को प्यारा है उस ही रूप में जो उसका ध्यान करता है उसकी रक्षा तुरन्त होती है। गुरु नाम है इष्ट का Ideal का और वह Ideal इन्सान या मनुष्य की इस काल देश में हर समय रक्षा करता रहता है।

प्रिय ओम प्रकाश तुम मुझे गुरु मानते हो मैं तुम्हें गुरु का रूप बता रहा हूं। क्योंकि मैं सत्यप्रिय व्यक्ति हूं इस विचार से मैं एक सतपुरुष के रूप में तुम्हें तुम्हारे अन्दर गुरु और चेले के सारतत्व को समझा रहा हूं। जीवित पूर्ण पुरुष का सतसंग आवश्यक है। मैं यह शब्द अभिमान से नहीं कह रहा हूं बल्कि सत्य कह रहा हूं। क्योंकि मैंने सत्यता को बहुत भली प्रकार से अनुभव किया। मैं स्वयं दुःखी रहा करता था अतएव अपने जैसे दुःखियों की अशान्ति को महसूस करते हुए मैंने सतसंग का सिलसिला चालू किया है। मुझे खुशी है कि आप सत्यता के निकटतम किनारे पर पहुच रहे हो। मेरी शुभ भावना है कि तुम सच्चाई को समझकर जब तक जीवन है इस काल चक्र में रहते हुए, काल चक्र के प्रभावों को

सच्चे सतगुरु दाता दयाल परम तत्व जो तुम से अलग नहीं उसकी शरण और प्रेम के प्रभावों से मुक्त रहो। जिसको गुरुतत्व की समझ आ जाती है उसके लिए इस जीवन के बाद कोई जीवन नहीं रहता क्योंकि अज्ञान दूर हो जाता है। तुम्हारा विशलेषण करने के ढंग का नाम अज्ञान को दूर करना है। परन्तु याद रखो संसारिक जीवन में अज्ञान सुखदायी होता है परन्तु विशलेषण अथवा ज्ञान प्राप्त करने के बाद अज्ञानी बनकर रहो अन्यथा तुम्हारा सांसारिक जीवन खराब हो जायेगा। बच्चा, तुम समझदार हो, विवेकी हो मैं तुमको सत्य कहा करता हूं। दाता दयाल जी, का बचन सुनो :—

जान बूझ अज्ञान बन, ज्ञान पाय अज्ञान।
बल पोरष से रहित हो, तब सच्चा बलवान।"

मैंने दाता दयाल की बातों को समझना चाहा, जीवन बहुत संघर्ष से गुजरा। दुनियां में अज्ञानी बन कर रहो अन्यथा सांसारिक जीवन नीरस हो जायेगा। कोई आनन्द नहीं मिलेगा। विशलेषण को अनुभव के पर्दे में न रखोगे तो शारीरिक और मानसिक व्यवहार में कष्ट होगा। यह शुभ राय तुम्हारे लिए प्रयाप्त है। जब कभी बाहरी प्रभाव की वजह से उदासीनता आया करे तो मेरी राय को याद कर लिया करना। तुम्हारी रक्षा होगी। मैं धोखा नहीं देता कि

मैं होशियारपुर में बैठा हुआ तुम्हारी सहायता कर सकता हूं बल्कि मेरे वचन जो कि असली और सच्चा गुरु है वो तुम्हारी सहायता करेंगे ।

"गुरु रूप न समझे कोई, भरम में पड़े अज्ञानी ।। टेक ।।
गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करें व्यवहार ।
सो प्राणी अति मूढ़ हैं, कैसे जावें भव पार ।
देह के बने अभिमानी ।
गुरु को मानुष जानकर सीत प्रशादी लें ।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके ।
गुरु तत्व न जानी ।
गुरु को मानुष जानकर मानुष करो विचार ।
सो नर मूढ़ गंवार है, भूल रहे संसार ।
मोह की फांस फंसानी ।
गुरु को मानुष जानकर भेड़ की चलते चाल ।
वह वन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल ।
पड़े योनी की खानी ।
गुरु नाम आदर्श का, गुरु हैं मन का ईष्ट ।
ईष्ट आदर्श को न लखे, समझो उसे कनिष्ट ।
बात बूझे मन मानी ।
गुरु भाव घट में रहे, अघट सुघट की खान ।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ महान ।
नहीं गुरु रूप पहचानी ।
चेला तो चित में रहे, गुरु चित के अकास ।
अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास ।
रहे गुरुपद घट ठानी ।
सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप ।
शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भरम के कूप ।
नर जन्म गवानी ।

कर्म भोग

मेरे साहित्य को पढ़ने वालो! कुछ कहना चाहता हूं। मैंने जीवन भर किसी चीज़ को तालाश के प्रभावाधीन बड़ी सच्चाई से काम लिया। प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा, दाता दयाल जी महाराज का आदेश था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना, आज 43 साल से मैं यह काम कर रहा हूं। मुझे यह दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा व अनुभव किया है यह सब लोगों को लाभ पहुंचा सकता है। मेरी अपनी कुरीद अर्थात हार्दिक खोज को समाप्त करने के लिये मैं अपने लिये इस अनुभव को सत्य मानता हूं।

अब मैं बूढ़ा हो गया। मौज अथवा मेरे कर्मों के कारण मैं इस मानवता मन्दिर बनाने के सिलसिले में फंस गया। केवल एक खुशी है कि

इस फंसाओ में मैंने निज स्वार्थ अर्थात धन, मान प्रतिष्ठा आदि नहीं रखा ।

मन्दिर में तीन हस्पताल हैं शिशु स्कूल, प्रैस, लायेब्रेरी और फ्री लंगर हैं खर्चे बहुत बड़ गये हैं । लगभग 4500 रुपये हर महीने कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है । 70000 रुपये की दवाइयां हस्पताल में दी गई हैं । शिशु स्कूल में बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती । आगे सेहत अच्छी थी तो बाहर दौरा करता था । कुछ तो सच्चाई ब्यान करने का अपना कर्तव्य पूरा करता था और कुछ मन्दिर के लिये रुपया जो कोई खुशी से देता ले आता था । अब शरीर अधिक काम नहीं कर सकता । यदि मेरा साहित्य पढ़ने वाले समझते हैं कि मेरा काम प्राय: सब अधिकारी जनता के लिये लाभदायक है तो जो इच्छा हो मन्दिर की सेवा करें ।

तमाम साहित्य जो मन्दिर से प्रकाशित होता है डाक खर्च साहित मुफ्त जाता है । मन्दिर पुस्तकों की सूची प्रकाशित कर देता है जो चाहे मुफ्त

मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि जो सज्जन मेरे विचारों से सहमत हैं वे अपने जीवन क्रियात्मिक बनायें। पुस्तकें या सत्संग केवल मन की भ्रम शंकायें दूर कर सकते हैं। यदि अमल नहीं है तो यह पढ़ना लिखना भी एक प्रकार की खुशी देगा अमली शान्ति नहीं मिलेगी। अधिक क्या लिखूं चले चलाओ का समय, मैंने वसीअत (Will) कर दी है कि मेरे बाद शर्मा पाल जिन का पूरा नाम डाक्टर इश्वर चन्द्र शर्मा है (जो अमरीका में हैं) और मुन्शी राम भगत मानवत और रुहानियत का प्रचार करेंगे। मन्दिर का सारकाम ट्रस्ट वालों के अधीन है। ट्रस्ट वालों को कह चुका हूं कि अगर किसी समय आर्थिक सहायता न मिलने के कारण काम न चल सके तो हस्पताल आदि बन्द कर दें केवल प्रकाशन का काम जारी रखें अगर यह भी न चल सके तो दाता दयाल जी महाराज का (Statue) धरती में गाड़ दें और मन्दिर की सारी सम्पत्ति सरकार या किसी और संस्था को दे दें।

ਪੰਜਾ ਕਤਾਂਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੈਜ ਨਾਮ ਦੀ ਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3 ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਨਾਮ ਦਾਨ

अंग्रेजी भा में साहित्य

1. A Word to Americans. A Word to Canadians.
3. Manvta the true religic
4. Religious Reserch. 5. Veight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realizatic
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in Amer
14. Yogic Philosophy of Saints.
15. Nam Dan 16. Autobiography of Faqir

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1) अगम का भेद। 2) कबीर साखी।

बन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसों चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥
तेरी शरनागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥
रूप ध्याऊँ नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥
सोस पर निज कर कमल धर, लिया चरन लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरन तेरी आय॥
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

Ptg By Manager. Raj Kumar Sood

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सतसंग
16-11-80 को होगा।

Regd. No. 26265/74 NOVEMBER 10th 1980
MANAV MANDIR P/HSP—7

ADDRESS

To ______________________________

____

____

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022